Anusandhanvallari
Vol 2024, No.1
December 2024
ISSN 2229-3388

पीतल नगरी मुरादाबाद के पीतल -धातु की कला आकृति

संजय कुमार[1]

[1]रिसर्च स्कॉलर, ड्राइंग एंड पेंटिंग बरकतुल्लाह विश्वविद्यालय भोपाल, मध्य प्रदेश

डॉ अपर्णा अनिल[2]

[2]प्रोफेसर, ड्राइंग एंड पेंटिंग बरकतुल्लाह विश्वविद्यालय भोपाल, मध्य प्रदेश

शोध सारांश

पीतल शब्द पीत से बना है और संस्कृत में पीत का अर्थ पीला होता हैA मुरादाबाद न केवल उत्तर प्रदेश अपितु समुचित देश में पीतल पात्रों का प्रमुख केंद्र हैA यहा¡ प्रत्येक गली-म©हल्ले में पीतल के करोबार से संबंधित लोग मिल जाते हैंA मुरादाबाद के पीतल पात्रों की मांग भारत के अलावा संयुक्त राज्य अमेरिका, ब्रिटेन, कनाडा, जर्मनी और मध्य पूर्व एशिया जैसे देशों में भी हैA मुरादाबाद का पीतल करोबार तथा पीतल पात्र अनेक विशेषताओं को संजोय हुए हैA यह देश की उत्कृष्ट कलाकारी का नायाब नमुना प्रस्तुत करता हैA यह अनेक लोगों के रोजगार का जरिया भी हैA इसने मुरादाबाद को विश्व मानचित्र पर विशिष्ट पहचान दी हैA करोबार तथा पीतल पात्रों की इन्हीं विशेषताओं को ध्यान में रखकर यह शोध पत्र लिखा जाएगा। इस शोध कार्य में पीतल करोबार की अपेक्षा उसकी मूल इकाई अर्थात पीतल पात्रों पर ध्यान केंद्रित किया जाएगाA लोग पीतल नगरी मुरादाबाद से परिचित नहीं है इसलिए उनके पीतल धातु के कला को लोगों के समक्ष उजागर करनाA

मुख्य बिंदु- *मुरादाबाद, पीतल, शिल्प, धातु, कलाकारी इत्यादिA*

पृष्ठभूमि:-

गतिशीलता ही जीवन है और गतिहीनता मृत्युA गतिशील जीवन ही भविष्य में पल्लवित और पुष्पित होता हुआ संसार को सौरभमय बना देता हैA मनुष्य की उन्नति के लिये यह आवश्यक है कि उसका जीवन उन्मुक्त, स्वच्छन्द और बंधन रहित हो, नवीन वस्तुओं, दृश्यों और स्थानों के प्रति उसके हृदय में कौतूहल एवं जिज्ञासा होA जिस मनुष्य में इस प्रकार की चतुर्दिक पिपासा होगी, वही मनुष्य प्रगति के पथ पर अग्रसर होता हुआ अपने अनुयायियों के लिये चरण-चिह्न छोड़ सकता हैA मानव की कौतूहल और जिज्ञासा नामक दो मनोवृत्तियाँ ही आज के विश्व को आगे बढ़ाने के लिये प्रेरित करतीं हैंA[1] जब किसी स्थान की लोक कलाओं के सम्बन्ध में विचार प्रकट किये जाते हैं या परिचय दिया जाता है तो उसमें यहाँ की महत्वपूर्ण कलाओं को ध्यान में रखते हुए उसकी चर्चा विस्तारपूर्वक की जा सकती हैA मुरादाबाद की महत्वपूर्ण कलायें निम्न हैं जैसे-धातु शिल्प कला एवं धातु मूर्ति शिल्प कला आदिA धातु+कला मिलाकर बनाये जाने वाले शब्दों में धातु-कला शब्द का भी महत्वपूर्ण स्थान हैA अतःएव धातु कला का क्षेत्र उस लोक द्वारा रचित कला रूप से है। जिसके आधार पर किसी स्थान की कलागत विशेषताएँ इंगित की जाती हैA कला के विविध रूपों का निर्माण करने के पीछे कार्य करने वाली चित्रकारी के परम्परागत रूपों की झोंकी दिखाने वाली परम्परा जैसे धातु शिल्प, मूर्ति कला एवं धातु शिल्प वस्तु कला आदि सब रूप कला के ही अनुभाग हैA मुरादाबाद में पीतल धातु का कार्य भी लगभग 50 साल पुराना माना जाता है, जिसमें भगवान की मूर्तियाँ तथा पूजा पात्र जो धर्म का प्रतीक होते हैं मुख्य हैंA वैज्ञानिक आधार पर कला का जन्म ही प्रतीकों से हुआ हैA' प्रतीक कला सांकेतिक अर्थ को समाहित किये हुए होती हैA प्रतीक को महत्वपूण एवं उपयोगी माना गया है तथा शिल्प कला भी एक उपयोगी कला मानी जाती हैंA कला जगत में प्रतीकों का स्थान विशिष्ट रहा हैA प्रतीक स्वयं में किसी भी अर्थ की गहनता को प्रतिबिम्बित करते हैं। कलाकार अनsक लौकिक अलौकिक एवं वास्तविक - काल्पनिक वस्तुओं के संयोग से भी प्रतीक सृष्टि करते हैंA ऐसे प्रतीक जिनको देखकर इच्छित वस्तु का बोध हो सकेA धार्मिक उपकरणों में प्रतीक विशेष रूप से आकर्षण का केन्द्र होते हैं, जो मुरादाबाद के कलाकारों की रूचि में शामिल हैA मुरादाबाद

शिल्पी प्रतीक चिह्नों में स्वास्तिक, ॐ, भगवान की मूर्तियाँ तथा कमल आदि विभिन्न धार्मिक आकृतियाँ पूजा पात्रों में विशेष रूप से उत्कीर्णित करते हैं, क्योंकि कला जगत में प्रतीकों का स्थान सर्वोपरि हैA वास्तविक एवं यर्थायता का समावेश प्रतीकों के सृजन में मिलता हैंA'[2] प्रतीक में वस्तु का स्वरूप एवं भाव स्थिर हो जाता है और वह सर्वत्र एक समान ही रहता हैA प्रतीक रचना में कल्पना का प्रमुख स्थान होता हैA मानव सभ्यता के विकास में प्रतीकों की रचना सर्वप्रथम हुई हैA मुरादाबाद की कला की बात करें तो हमें दीर्घकालीन परम्परा से जुडी कला के विविध रूप देखने को मिलते हैं, जो इस क्षेत्र के सामान्य - जनों की कला से परिचित कराते हैA इसी प्रकार के विभिन्न प्रकार के उद्योगों सहित धातु शिल्प उद्योगों का यदि सिंहावलोकन करें तो पायेंगे कि औद्योगिक क्षेत्र में मुरादाबाद का नाम भी आता रहा हैA एक जमाना था जब

विभिन्न प्रकार के उद्योग मुरादाबाद में चर्मोत्कर्ष पर थेA समय और परिस्थितियाँ बदली फलतः उद्योगों की गतिशीलता में भी परिवर्तन हुआ। कुछ उद्योग काल के गाल में समा गये तो कुछ उद्योगों की विकास गति मंद होती चली गयी, परन्तु हस्त निर्मित घातु वस्तु शिल्प कला (हSण्डीक्राफ्ट) एवं धातु मूर्ति शिल्प कला से जुडे लघु उद्योग आज भी मुरादाबाद में अपना यथावत वर्चस्व ही नहीं बनाये हुए है अपितु अपनी नई नई विविधता एवं नवीनता के साथ प्रगति पथ पर अनवरत अग्रसर हैA निश्चय ही मुरादाबाद की हस्तनिर्मित धातु शिल्प वस्तु, कला एवं धातुशिल्प ewर्तिकला के विकास में उज्ज्वल भविष्य की कामना निहित हैA

परिणाम और चर्चा

लगभग तीस साल पहले तक, मुरादाबाद में स्व-नियोजित कारीगर एक बड़े घरेलू बाजार के लिए पीतल के बर्तन बनाते थे, लेकिन निर्यात बिक्री के आगमन के साथ, उद्योग अब पूरी दुनिया में खुदरा विक्रेताओं (एआईएचबी, 1973) को पूरा करता हैA 2001 में, मुरादाबाद से विभिन्न प्रकार की धातु की कलाकृतियों का निर्यात 1 बिलियन अमरीकी डालर के करीब था, जबकि 2006 के आंकड़ों के अनुसार निर्यात घटकर 750 मिलियन अमरीकी डालर रह गया हैA कारीगरों और छोटे घरेलू पीतल के बर्तनों की इकाइयों का विदेशी मुद्रा के प्रवाह में बड़ा योगदान है। औपचारिक और अनौपचारिक क्षेत्र की लगभग 25,000 ऐसी इकाइयाँ इस उद्योग में लगी हुई हैंA[3]

वर्तमान में, पीतल के साथ-साथ लोहे, एल्यूमीनियम, का¡च, लकड़ी, लोहा और सींग जैसी सामग्रियों से बनी अन्य कलाकृतियाँ भी बड़ी मात्रा में निर्मित और निर्यात की जा रही हैंA अंतरराष्ट्रीय बाजार में पीतल की कीमत में तेजी से वृद्धि के कारण धातु की मांग में भारी उछालआई है, जिसके परिणामस्वरूप निर्माता अन्य धातुओं की ओर रुख कर रहे हैं जिनकी बेहतर मांग है और अधिक मुनाफा देते हैंA पीतल के ऊपर अन्य धातुओं को वरीयता देने का एक अन्य कारण 'वजन' कारक हैA खरीदार और उपभोक्ता दोनों एक हल्की धातु पीतल से बनी हुई पसंद करते हैं, जो हैंडलिंग में सुविधा देता है और इसके परिणामस्वरूप अधिक लाभ भी होता है क्योंकि माल ढुलाई शुल्क और बाद के कर कम होते हैं A[4]

तालिका 1. मुरादाबाद में पंजीकृत पीतल कारखाने और लघु उद्योग इकाइयाँ

वर्ष	पीतल कारखानों की संख्या	मजदूरों की संख्या	इकाइयों की संख्या	मजदूरों की संख्या
2003-04	18	2567	6953	29109
2004-05	18	2567	6852	28769
2005-06	18	2567	3953	19508
ग्रामीण (2005-06)	15	2426	1305	6383
शहरी (2005-06)	3	141	2648	13125
कुल	18	2567	3953	19508

स्रोतः जिला सांख्यकी पत्रिका, मुरादाबाद, 2006

शोध पत्र का उदेश्य-

1. मुरादाबाद की भौगोलिक, सामाजिक, सांस्कृति तथा ऐतिहासिक पहचान को प्रस्तुत करनाA
2. मुरादाबाद में पीतल करोबार का अध्ययन करनाA
3. मुरादाबाद के धातु उद्योग का अध्ययन करनाA
4. मुरादाबाद के पीतल धातु शिल्प का अध्ययन करनाA
5. मुरादाबाद के पीतल पात्रों की विशेषताओं का अध्ययन करनाA

पीतल की धातु-पिंड बनाने की इकाइया¡

घरेलू इकाइया¡ आम तौर पर पिंड बनाने का कार्य करती हैंA ये इकाइया¡ स्क्रैपिंग इकाइयों (कारखानों) से प्राप्त पीतल के स्क्रैप को पिघलाती हैं या मिश्र धातु, पीतल बनाने के लिए जस्ता और ता¡बे को पिघलाती हैंA पिघलने के लिए आवश्यक तापमान बहुत अधिक होता है और यहा तक कि इकाई के मालिकों को भी उस तापमान के बारे में पता नहीं होता है जिस पर पिघलना होता हैA पीतल बनाने के लिए कारीगर बेहद पारंपरिक तरीके अपनाते हैंA कोयले से चलने वाली भट्टिया¡ जो आम तौर पर मोटर से चलने वाले पंखे से चलती हैं, का उपयोग पीतल को पिघलाने के लिए सिल्लिया¡ बनाने के लिए किया जाता हैA[5] यूनिट के मजदूरों ने बताया कि गर्मी के दिनों में उन्हें काम करने में काफी दिक्कत होती हैA यूनिट के अंदर काम करने वाले न केवल जलते हुए कोयले से धुआँ लेते हैं बल्कि पिघले हुए पीतल के धुए¡ को भी अंदर लेते हैं जो एक बिंदु से आगे वाष्पित होने लगता हैA

मुरादाबाद में पीतल से सम्बंधित समस्या

मुरादाबाद के पीतल पात्रों का कलात्मक अध्ययन' एक महत्वपूर्ण शोध कार्य होगाA 'मुरादाबाद के पीतल पात्रों की कलात्मकता, इस शहर की पहचान हैA पीतल पात्रों की कला शिल्प सदियों से अपनी पहचान बनाए हुए हैA पीढ़ी दर पीढ़ी इसमें नवीन तकनीक एवं विधियों के प्रयोग के बावजूद भी इस कला-शिल्प ने अपनी प्राचीन पहचान को बनाए रखा हैA अनेका-नेक भौगोलिक एवं राजनैतिक परिवर्तन होने पर भी यह शिल्प अपने अस्तित्व को बनाए हुए है, जो अपने आप में इसकी अनूठी विशेषता हैA शोधकर्ता द्वारा इस शोधकार्य में पीतल पात्रों की कला शिल्प संबंधित ऐसी ही विशेषताओं का आंकलन करने का प्रयास किया जाएगाA इसके अतिरिक्त इस शोध कार्य में मुरादाबाद के प्राचीन वैभव, यहां की सामाजिक समरसता, यहा¡ की विशिष्ट सांस्कृति इत्यादि पहलुओं को भी उकेरने का प्रयास किया जाएगाA

निष्कर्ष

मुरादाबाद को "पीतल नगरी" के नाम से जाना जाता हैA भविष्य में निर्मित पीतल के उत्पाद भारत की संस्कृति, विरासत, इतिहास एवं विविधता को ओर भी उजागर करेगाA यहाँ पीतल से निर्मित उत्पादों की सजावट के लिए विभिन्न डिजाइनों एवं आकृतियों का इस्तेमाल होता है, जो पुरे विश्वों को आगे जोड़ेगा साथ ही मुरादाबाद से विश्वभर में पीतल से बने सामग्री का भी आयात-निर्यात में भी लाभ होगाA जिले में स्थित विभिन्न घरेलू इकाइयां एवं बड़े उद्योग धातु की वस्तुओं का उत्पादन भी होगा। हस्तशिल्प धातु वस्तुओं को धोने, आकार देने और चमकाने का काम घरेलू इकाइयों में भी वृद्धि होगीA अब मुरादाबाद जिले के निर्यातकों ने अन्य धातुओं पर भी कार्य करना शुरू कर दिया है जैसे कि एल्यूमीनियम, स्टेनलेस स्टील, लोहा आदिA

संदर्भ सूची

1. डॉ० उषा चौधरी मुरादाबाद जिले के स्थान-नामों का भाषा वैज्ञानिक अध्ययन
2. संस्कार दीपक-मुरादाबाद नगर विशेषांक संस्कार भारती मुरादाबाद द्वारा प्रकाशित, मुरादाबाद गजेटियर-1909.

3. गिरिजा, रूहेलखण्ड-इतिहास एवं संस्कृति संस्कार दीपिका- मुरादाबाद विशेषांक, संस्कार भारती द्वारा प्रकाशित
4. The Industrial Arts of India, George CM.Birdwood, London, 1880
5. Arts and Crafts of India', George Walls andPercy Brown, 1979